आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

विशेषांक

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 अंक : 12 बीकानेर, अगस्त, 2014 मूल्य : रु. 2.00

मुख्यमंत्री श्रीमती राजे द्वारा पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर का भ्रमण

मुख्यमंत्री द्वारा पशुपालन नए आयाम के ताजा अंक एवं अन्य प्रकाशनों का विमोचन

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंन्धरा राजे, राजस्थान सरकार के मंत्रीगणों और राज्य प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने बीकानेर संभाग में 19 जून से 30 जून 2014 तक चले ''सरकार आपके द्वार'' कार्यक्रम के तहत संभाग के चारों जिलों का भ्रमण कर जन सुनवाई में भाग लिया और गांव–ढ़ाणी में पहुंचकर लोगों के अभाव अभियोग सुने। कार्यक्रम के प्रारम्भ में 19 जून और 30 जून को मंत्रिमंडलीय बैठकों की वेटरनरी विश्वविद्यालय ने मेजबानी की। दोनों ही बैठकों का आयोजन कुलपति सचिवालय के सभागार में किया गया। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 29 जून को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कोड़मदेसर स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र का भ्रमण किया। कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत ने केन्द्र पर साहीवाल और कांकरेज गौ नस्लों के संवर्द्धन और विकास कार्यो से माननीया मुख्यमंत्री को अवगत करवाया। श्रीमती राजे ने केन्द्र पर स्थानीय नस्ल की भेड़ और बकरी की अनुसंधान परियोजनाओं की भी जानकारी ली। प्रो. गहलोत ने बताया कि केन्द्र को राज्य सरकार द्वारा इन्दिरा गांधी नहर परियोजना से पानी की मंजूरी मिल चुकी है। अतः यहां बड़े पैमाने पर हरा चारा फसलों की पैदावार फव्वारा और बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति से ली जा सकेगी। वर्तमान में इस क्षेत्र के लिए वरदान सेवन घास का उत्पादन और बीज सग्रंहण का कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने हाहड्रोपोनिक्स तकनीक से प्राप्त हरे चारे का भी अवलोकन किया। श्री राजे ने साहीवाल गौवंश जिसकी प्रतिदिन दुग्ध क्षमता 25 लीटर तक प्राप्त की गई है, को राज्य के पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए विश्वविद्यालय को कार्य करने के लिए निर्देशित किया। माननीया मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित माह जुलाई के मासिक प्रकाशन ''पशुपालन नए आयाम'' और जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक राजुवास न्यूज लेटर के ताजा अंक एवं पशुचारे के लिए उपयोगी प्रमुख घासें, पशुधन के लिए उपयोगी प्रमुख चारा फसलों की पुस्तिकाओं का विमोचन किया।

स्वाधीनता दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ

बीकानेर में ''सरकार आपके द्वार''

वेटरनरी विश्वविद्यालय की झलकियाँ

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती राजे को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत

मुख्यमंत्री श्रीमती राजे द्वारा पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का अवलोकन

मुख्यमंत्री श्रीमती राजे द्वारा हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से उत्पादित हरे चारे का अवलोकन

पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में मुख्यमंत्री श्रीमती राजे कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत से विचार–विमर्श करते हुए

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी द्वारा पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का भ्रमण

अतिरिक्त मुख्य शासन सचिव (आयोजना) श्री राकेश वर्मा द्वारा पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का अवलोकन

पशुपालन नए आयाम : एक वर्ष का सफर

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत की परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय ने पहल करते हुए पशुपालक और कृषक भाइयों के लिए उनकी अपनी सरल हिन्दी भाषा में सितम्बर 2013 से प्रति माह ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन शुरू किया। आपके स्नेह और सहयोग की बदौलत इस प्रकाशन ने एक वर्ष पूरा कर लिया है। कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत के निर्देशन में इस प्रकाशन को बहुआयामी बनाने के लिए किये गए उपायों से लोगों तक इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। उन्हीं के निर्देश पर प्रति माह का ताजा अंक कृषकों, पशुपालकों और पशु प्रेमियों को घर बैठे मिल रहा है। ढ़ाणी, गांव, गली, मौहल्ला और कस्बों/शहरों तक धीरे–धीरे प्रसार संख्या का बढ़ना इसकी लोकप्रियता का नमूना है। राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत तक इसकी पहुंच बनाने के लिए हम प्रयासरत हैं। पशुपालन नए आयाम में कुलपति महोदय अपने संदेश के मार्फत पशुपालन क्षेत्र में नवीन तकनीक, रीति–नीतिगत फैसलों, पशु कल्याणकारी कार्यक्रमों और पशुपालकों के उपयोगी मसलों को लेकर रू–ब–रू होते हैं। पशुपालन में उनके दीर्घकालीन अनुभवों, सम्पर्क और ज्ञान से पाठकगण लाभान्वित होते रहते हैं तथा इस क्षेत्र में एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में मदद मिल रही है।''निदेशक की कलम'' में सामयिक विषयों पर पशुपालकों को सलाह से पशुपालन के रोजमर्रा कार्यों में आसानी होती है। "अपने विश्वविद्यालय को जानिए" कॉलम' से विभिन्न विभागों/इकाइयों के बारे में आम–अवाम को जानकारी मिलती है जिससे वे उनकी उपयोगी सेवाओं का लाभ ले सकें। ''विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य'' का कॉलम अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न संकायों में अनुसंधान नतीजे और संकलित शोध आंकड़े पशुपालक और पाठकों के हितकारी होते हैं। चालू माह के लिए पशु रोगों का पूर्वानुमान का प्रकाशन पूरे राज्य के पशुपालकों के लिए अत्यंत ही उपयोगी कॉलम है। संभावित पशुरोगों का पूर्वानुमान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की विशिष्ठ सेवाएं हैं। इस बाबत विस्तृत जानकारी के लिए विशेषज्ञों के साथ संवाद–सम्पर्क भी किया जा सकता है। ''सफलता की कहानी'' कॉलम पशुपालन और कृषि कार्यों में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करने वाले व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में पाठकों को जानकारी पहुंचाना है, जिससे वे अपने व्यवसाय को लाभकारी बनाकर एक सफल उद्यमी बनने को प्रेरित हो सकें। विश्वविद्यालय में होने वाली प्रमुख गतिविधियों और पशुपालकों से सम्बन्धित समाचारों का भी समावेश किया जाता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के एपेक्स सेन्टर द्वारा प्रतिमाह किसी एक पशुरोग के कारण–निवारण और प्रबंधन विषय पर आलेख प्रकाशित किया जा रहा है, जो कि पशुपालकों के लिए बहुत उपयोगी है। पशुपालन नए आयाम के प्रत्येक अंक में दो या तीन पशुरोग, उपचार, बेहतर पशुपालन, पशुआहार, प्रजनन, पोषण, डेयरी, मुर्गीपालन, पशुओं के व्यवहार व सामयिक विषयों पर उपयोगी और सारगर्भित आलेखों का प्रकाशन किया जाता है। ये आलेख पशुपालन के चिकित्सा विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए जाते हैं जो कि देश के नामी–गरामी विश्वविद्यालय और संस्थानों से सम्बद्ध हैं। गायों के परखनली शिशु (आई.वी.एफ.) एक उन्नत प्रजनन प्रौद्योगिकी, दूध और मांस उत्पादन बढ़ाने के तौर–तरीकों, पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान, दुधारू गाय और श्रेष्ठ प्रजनक सांड का चयन कैसे करें, पशुओं में आपदा प्रबंधन के उपाय, सर्पदंश के प्रकोप और उपचार, अंडों को संरक्षित रखने की सरल विधियां, पशुओं में अत्यधिक तनाव को कम करें, आदर्श पशु आहार और जल की विशेषताओं से सम्बद्ध विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया है। तमाम धीर–गंभीर बातों के अंत में पशुपालन से सम्बद्ध एक ''कार्टून'' आपकी मुस्कान के लिए दिया जाता है। बोधगम्य और सरस भाषा में संक्षिप्त, सारगर्भित और उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करते समय ''गागर में सागर'' उक्ति का पूरा ध्यान रखा जाता है। -सम्पादक

हार्दिक बधाई !

प्रिय किसान और पशुपालक भाईयों। "पशुपालन नए आयाम'' को आपकी सेवा में सफलतापूर्वक एक वर्ष पूरा होने पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई। इसके प्रत्येक अंक में समाहित सामग्री आपके रोजमर्रा के पशुपालन कार्यों में सहयोगी बनकर कुछ नया करने की प्रेरणा देती होगी, ऐसा मुझे विश्वास है। बदलते जमाने की रफ्तार के साथ चलना हमारे हित में है। पुरातन ज्ञान और समझ को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी और कार्य शैली में समावेश करने से हमारा और समाज का भला हो सकता है। पशुपालन नए आयाम का उद्देश्य पशुपालन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित कर पशुपालक और कृषकों के आर्थिक उन्नयन द्वारा आत्मनिर्भरता की ओर ले जाना है। इसकी विषय वस्तु में आपके सर्वांगीण विकास का भाव रखा गया है। इसको ओर अधिक सार्थक और उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

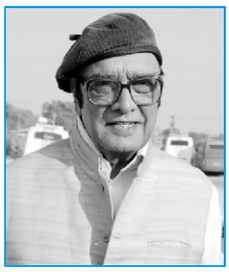

JOSHI BUILDING
Station Road
Bikaner-334001 India
Ph. : 0151-2527700, 01, 02
Fax : 0151-2523486

डॉ. गोपाल जोशी
विधायक, बीकानेर (पश्चिम)

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि कृषकों, पशुपालकों व पशु प्रेमियों की हितार्थ आपकी परिकल्पना ''पशुपालन नए आयाम'' ने सफलता पूर्वक एक वर्ष पूर्ण कर लिया। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है एवं कृषि क्षेत्र में पशुधन का उपयोग आज भी बरकरार है। पशुधन के अन्तर्गत बीकानेर का दुग्ध उत्पादन एवं ऊन उत्पादन क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

पशुपालन में आपके अनुभव एवं ज्ञान से पाठकगण जिनमें विशेषतः कृषक एवं पशुपालक लाभान्वित होंगे। नवीन तकनीक, पशु कल्याणकारी कार्यक्रमों एवं उपयोगी मसलों पर ''निदेशक की कलम'' पशुपालकों के रोजमर्रा कार्यों में हितकारी साबित होगा। इस मासिक पत्रिका में दिये गये आलेख पशुपालन के चिकित्सा विशेषज्ञों, शोधकर्त्ताओं और विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किये गये, उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। इन्हीं विश्लेषणों का लाभ आम कृषक एवं पशुपालकों को प्राप्त होता रहेगा। ''पशुपालन नए आयाम'' निश्चित तौर पर पशुपालकों, कृषकों के लिए बेहद ही लाभदायक सिद्ध होगी। अतः मैं इसके प्रकाशन के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय का आभार व्यक्त करता हूँ एवं इससे जुड़े समस्त सदस्यों की प्रगति के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ

(डॉ. गोपाल जोशी)

दूरभाष : 0151-2226043 (का.)
0151-2226041 (नि.)
0151-2545221 (फैक्स)
e:mail-divcomm-bik-rj@nic.in

कार्यालय संभागीय आयुक्त,
बीकानेर संभाग, बीकानेर

सुबीर कुमार
संभागीय आयुक्त, बीकानेर

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' पशु पालकों एवं कृषकों के लिए अत्यन्त उपयोगी प्रकाशन है। पत्रिका के सफलतापूर्वक एक वर्ष पूर्ण होने पर मेरी हार्दिक बधाई। इसमें प्रकाशित विविध वैज्ञानिक आलेख एवं साज–सज्जा उच्चकोटि की है। पशुपालन हमारे राज्य की अर्थव्यवस्था और ग्रामीण आजीविका से जुड़ा हुआ एक अहम् विषय है और राज्य में ऐसे महती प्रकाशनों की आवश्यकता सदैव बनी रहती है। पत्रिका में पशुपालन, पशु आहार, पोषण, प्रजनन, डेयरी, मुर्गीपालन, पशु रोग तथा पशु व्यवहार के साथ–साथ पशुपालन विषयक शोध निष्कर्षों का समावेश ''गागर में सागर'' की उक्ति को चरितार्थ करता है। मुझे आशा है कि यह प्रकाशन पशुपालकों और कृषक समुदाय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होगा। माह अगस्त, 2014 के अंक को विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुबीर कुमार)

''शिव विलास''
लालगढ़ पैलेस
बीकानेर (राज.)
फोन : 0151-2524115
मो. : 9460218215
7597417315

सिद्धि कुमारी
विधायक, बीकानेर (पूर्व)

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता है कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के मासिक प्रकाशन को एक वर्ष पूरा हो गया है। कृषि और पशुपालन हमारे राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है और यहां इस प्रकार के प्रकाशन की महत्ती आवश्यकता है। पशुपालन पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा है और आजीविका का एक प्रमुख स्रोत भी इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों, वैज्ञानिकों के शोध अनुसंधान और तकनीक को आम किसान और पशुपालकों तक पहुंचाने के सकारात्मक प्रयासों की सराहना करती हूँ। पशुपालन के नए आयाम अपने उद्देश्यों में सफल हो ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं।

(सिद्धि कुमारी)

Collector & District Magistrate
BIKANER, Rajasthan
Phone : 0151-2226000(O)
0151-2226001(R)
Fax : 0151-2226032
e-mail : dm-bik-rj@.nic.in

ARTI DOGRA
I.A.S.

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी परिकल्पना और निर्देशन में प्रसार निदेशालय द्वारा राज्य के पशुपालक–कृषक और पशु प्रेमियों के हित में गत एक वर्ष से मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का सफलता पूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। यह मासिक पत्रिका आकर्षक होने के साथ–साथ इसमें सम्मिलित होने वाले आलेख उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक है।

माह अगस्त, 2014 में पत्रिका का विशेषांक भी प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक सभी पाठकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। मैं इसकी सफलता एवं सार्थकता की पूर्ण कामना करती हूँ

(आरती डोगरा)

भारत में पशु चिकित्सा सेवाओं में अग्रणी राजुवास का सम्बद्ध चिकित्सालय

राजुवास के पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय का पशुचिकित्सालय अपनी अति विशिष्ट सेवाओं में नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। पशु चिकित्सा में आधुनिक सुविधाऐं जुटाई जा रही है, जिससे यहां पशुओं को सर्वाधिक लाभ मिल सके। इस कड़ी में गायों तथा भैंसों के लिए वातानुकूलित इमरजेन्सी वार्ड बनाया गया है, जिसमें तापघात ग्रसित पशुओं का इलाज किया जाता है। इस वर्ष की भीषण गर्मी में तापघात के शिकार अनेक पशुओं को बचाया गया। ऐसी सुविधा देने वाला यह देश का संभवतः पहला पशु चिकित्सालय है। यहां एक आधुनिक ब्लड़ बैंक स्थापित किया गया है, जो कि अभी तक भारत के किसी भी पशुचिकित्सालय में शायद ही हो। इस ब्लड बैंक में वर्तमान में भैंस तथा श्वानों का खून संग्रहित किया जाता है, ताकि इन पशुओं में पी. पी. एच. तथा पारवों वायरस नामक बीमारियों की वजह से होने वाली हिमाग्लोबिन की कमी को दूर करने के लिए खून चढ़ाने से पशु को जीवनदान मिलता है। रोग निदान क्षेत्र में इस चिकित्सालय में एक अत्याधुनिक अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन तथा एक डिजीटल एक्स–रे व एक पोर्टेबल एक्स–रे मशीन लगाई गई है। एक्स–रे की मदद से पशुओं के पेट में जाने वाली लोहे की नुकीली तार, कील आदि का तुरन्त निदान होता है तथा यदि कोई लोहे की वस्तुएं ह्दय की झिल्ली में पहुंच जाए अथवा डायफ्रेग्मेटिक हर्निया हो जाने पर पशुओं को आफरा आने का भी निदान हो जाता है, ताकि उचित समय पर शल्यक्रिया कर पशुओं को बचाया जा सके। पशुचिकित्सालय में एक अत्याधुनिक वातानुकूलित रोग निदान प्रयोगशाला का भी समावेश किया गया है, जिसमें खून, मूत्र, गोबर, दूध आदि का गहन परीक्षण कर रोग का पता लगाया जाता है। इस पशुचिकित्सालय में ऊंटों, घोड़ों तथा गायों में भी कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा है। हाल ही में इस चिकित्सालय में सुविधाओं का विस्तार करते हुए एक क्रिटीकल केयर यूनिट भी बनाया गया है जिसमें पशुओं विशेषकर कुत्तों को जानलेवा बीमारी से बचाने के लिए सुविधाएं विकसित की गई है। चिकित्सालय के निदेशक डॉ. टी. के. गहलोत के अनुसार यह चिकित्सालय चौबीसों घंटे सेवा प्रदान करता है। इसकी सुविधाओं को आधुनिक तथा विश्वस्तरीय बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

घायल बाज ने उपचार के बाद आकाश में भरी उड़ान

बीकानेर। घायल बाज को एक पक्षी प्रेमी ने उसे वेटरनरी विश्वविद्यालय की सर्जरी क्लिनिक पहुँचाया जहां त्वरित उपचार के बाद इस शिकारी पक्षी ने पुनः आकाश में उड़ान भरी। पक्षी प्रेमी ने घायल होकर असहाय पड़े बाज को देखा जिसे कौए अपना निवाला बनाने की कोशिश कर रहे थे। जीव जंतुओं के प्रति दया का भाव रखने वाले पक्षी प्रेमी ने तुरन्त इसे वेटरनरी विश्वविद्यालय की सर्जरी क्लिनिक पहुँचा दिया। क्लिनिक निदेशक प्रो. टी.के. गहलोत ने घायल बाज की तत्काल जांच कर जीवन रक्षक इंजेक्शन लगवा कर पक्षियों के इन्डोर पिंजरे में रखवाया और दाना–पानी भी उपलब्ध करवाया। मात्र 24 घंटे के उपचार से बाज के पैरों व पंखों में शक्ति का संचार हुआ जिससे वह गतिमान हो गया। पिंजरे का दरवाजा खोलने पर ठीक हुए बाज ने सफल उड़ान भरी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी क्लिनिक में हाल ही में शुरू की गई घायल पक्षियों के पिंजरे की इन्डोर व्यवस्था से उपचार कार्यों में तेजी के साथ आम जन में पक्षियों की सुरक्षा और संरक्षण कार्यों के प्रति जागरूकता आई है। निरीह पक्षियों की प्राण रक्षा के लिए पशु प्रेमियों का सहयोग जरूरी है। राजुवास पशु चिकित्सालय में इन सुविधाओं का विस्तार कर बड़े पक्षियों के लिए भी उपचार के उपाय किए जा रहे हैं।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

बीकानेर में राठी गौवंश के संवर्द्धन का पशुधन अनुसंधान केन्द्र

राज्य की प्रसिद्ध गौवंश राठी के संवर्द्धन, प्रजनन और संरक्षण का कार्य वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में स्थापित पशुधन अनुसंधान केन्द्र में किया जा रहा है। प्रारम्भ में राठी गौवंश का प्रजनन सुधार कार्य यहां शुरू किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वर्ष 2009–10 में राजस्थान कृषि विकास योजना के अन्तर्गत यहां राठी प्रजनन फार्म एक वृहद् रूप ले चुका है। विश्वविद्यालय के इस पांचवें पशु अनुसंधान केन्द्र में अभी 283 राठी और 138 संकर नस्ल के गौवंश का लालन–पालन किया जा रहा है। वर्तमान में राठी गौवंश की 111 गायें, 102 बछड़ियां, 65 बछड़े, 3 सांड और 2 बैल हैं। वर्ष 2013–14 में दूध, गोबर की खाद् और अन्य बिक्री से 58 लाख रूपये की वार्षिक आय हुई है। गायों का दूध मशीनों से

मशीन से दूध का दूहना

दुग्ध अवशीतन संयंत्र

दूहना और अवशीतन संयंत्र में पाश्चुराइजेशन का कार्य भी किया जाता है। केन्द्र में गौवंश के वैज्ञानिक रखरखाव, बेहतर प्रबंधन और पौष्टिक आहार से नियमित और सुरक्षित प्रजनन, उत्पादन में लगातार वृद्धि और अच्छे स्वास्थ का लगातार अध्ययन करने के उत्साहजनक और सकारात्मक नतीजे मिले हैं। राठी गाय में ब्याहने की औसत उम्र 5 से 6 वर्ष थी जो यहां 3 से साढ़े तीन वर्ष तक पहुंची है। यहां राठी गायों में प्रति ब्यात 1700 लीटर दूध औसतन से बढ़कर 2400 लीटर तक पहुंचा है। केन्द्र के विशेषज्ञों ने राठी में सामान्यतः पाए जाने वाले दो ब्यात के बीच लगभग 510 दिन के अंतर को भी कम करने में सफलता अर्जित की है। इसे 386 दिन तक लाया गया है। उचित प्रबंधन से केन्द्र में 44 राठी गायों से दो से चार हजार चार सौ लीटर दुग्ध प्रति ब्यात है, जिनसे अधिकतम दूध मिला है। 15 राठी गायों से 3000 लीटर प्रति ब्यात अथवा इससे अधिक दूध लिया गया है। ड्राई पीरियड भी 121 से घटकर 103 दिन तक लाया गया है। एक गाय से 25.7 लीटर दूध प्रतिदिन तक प्राप्त किया गया है। पहली बार ब्याहनें की उम्र 2001 में 1596.5 दिन थी जो घटाकर 1243 दिन तक लाकर दर्ज की गई है। पशुधन अनुसंधान केन्द्र द्वारा नस्ल के संवर्द्धन के लिए राज्य की गौशालाओं, प्रगतिशील पशुपालकों और गौ–हितकारी संस्थाओं को अब तक 105 राठी नस्ल के बछड़े गौवंश प्रजनन के लिए उपलब्ध करवाए हैं।

मरू प्रदेश की कामधेनुः राठी गाय

भारत देश की अधिकांश जनसंख्या शाकाहारी है। इसके कारण दूध का भोजन के रूप में भी अपना एक विशेष महत्व है। भारत में कृषि के साथ पशुपालन भी महत्वपूर्ण है। दुग्ध उत्पादन से किसानों की आर्थिक स्थिति को संबल मिलता है। गायों की जनसंख्या उत्तर –पश्चिम राजस्थान में सर्वाधिक है। राठी गौवंश मुख्यतः बीकानेर, हनुमानगढ व गंगानगर जिले में बहुतायत से है। पश्चिमी राजस्थान में गौवंश की राठी नस्ल की गायों की उपयोगिता अधिक है। राठी गाय अधिक दुग्ध उत्पादन की क्षमता के साथ साथ स्थानीय जलवायु के अनुकूल बने रहने की विशिष्ट क्षमता रखती है। राठी गाय का दुग्ध उत्पादन अन्य नस्ल की गायों (गिर, लालसिंधी, थारपारकर, साहीवाल आदि) के लगभग बराबर है। राठी नस्ल का विकास उत्तर–पश्चिम राजस्थान में पाई जाने वाली गिर, लालसिंधी, थारपारकर व साहीवाल नस्लों के संकरण के माध्यम से किया गया है। जिस में राठ जाति के गुर्जर समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी नाम के कारण इस नस्ल का नाम राठी रखा गया है। यह जाति राठ पट्टी में फैली हुई है जो कि बीकानेर के उत्तर पश्चिम से गंगानगर जिले तक है। इसके पश्चात इस नस्ल का अन्तः प्रजनन व चयन माध्यम से विकास हुआ जिसके कारण राठी नस्ल की गायों ने अपनी पहचान बनाई। राठी नस्ल की गायों में रंगों की विभिन्नता हल्के भूरे रंग से गहरे रंग के साथ काले व सफेद धब्बे लिए हुए होती है। राठी नस्ल की गायों में चौड़ा माथा, मध्यम आकार व लम्बी पूंछ होती है। नर राठी की ऊंचाई (कूबड के पास) लगभग 1.45 मीटर एवं मादा की लगभग 1.15 मीटर होती है। नर राठी की लम्बाई (कंधे से पिन बोन तक) 1.50 मीटर और मादा की लम्बाई 1.35 मीटर होती है। इनके शरीर का घेरा नर में 1.90 मीटर एवं मादा में 1.50 मीटर होता है। राठी के शरीर का औसत भार लगभग 385 किलोग्राम नर में एवं लगभग 320 किलोग्राम मादा में होता है। पशुपोषण के लिए आवश्यकतानुसार बांटा व चारा खिलाया जाता है। बांटा(दाना) बनाने के लिए इस प्रकार मिश्रण तैयार करें –

खल (ओइल केक)	20 भाग (प्रतिशत)
चापड (व्हीट ब्रान)	42 भाग (प्रतिशत)
दाल चूरी (ब्रोकन पल्स)	35 भाग (प्रतिशत)
खनिज लवण (मिनरल मिक्सचर)	2 भाग (प्रतिशत)
नमक	1 भाग (प्रतिशत)

इस बांटे को खिलाने से पहले तीन चार घंटे तक पानी से भिगोकर गीला रखें और बाद में खिलाएँ। इसमें एक किलोग्राम बांटा प्रत्येक गाय को देवें तथा एक किलोग्राम अतिरिक्त बांटा प्रति दो लीटर दुग्ध उत्पादन की दर से देवें। प्रजनन हेतु सांडों व ग्याबन गायों को कुल दो किलो बांटा प्रतिदिन देवें। पशु के शारीरिक भार का ढाई प्रतिशत चारा उसे खिलाना चाहिए। उपलब्धतानुसार चारा देवें साथ ही हरा चारा 1:4 के अनुपात में देवें। राठी नस्ल की गायों का औसत दुग्ध उत्पादन 1750 लीटर प्रति ब्यात है। इसके दुग्ध में वसा की मात्रा अधिक होती है। लेकिन कुछ गायों में दुग्ध उत्पादन 2500 लीटर प्रति ब्यात से भी अधिक पाया गया है। इस गाय का विशेष गुण है कि यह किसानों के लिए आर्थिक रूप से उपयोगी है। इसमें अधिक गर्मी सहने की क्षमता है। राठी गायें यहां की अत्यधिक विषमता वाले मौसम गर्मियों में तापमान 48 डिग्री सेन्टीग्रेट एवं सर्दियों में निम्नतम 1 डिग्री सेन्टीग्रेट में भी कुशलता पूर्वक निर्वाह कर सकती है। इसमें अकाल के समय में कुपोषण का कुप्रभाव कम होता है, क्योंकि यह अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली होती है। यह उन किसानों के लिए भी उपयोगी है जो कि पशुपालन के मामलें में अधिक सजग नहीं रहते। राठी में ताव (हीट) लगभग 21 दिन के अन्तराल से आता रहता है, और यह प्रत्येक बार 24 घण्टे तक रहता है। राठी गाय का गर्भकाल 9 माह व 3 दिन के लगभग होता है। इसकी प्रथम बार गर्भवती होने की आयु लगभग 3.5 वर्ष से 4.5 वर्ष तक होती है। ब्याहने के बाद पहला ताव 4–5 माह बाद आता है। इस गाय में ब्याने के पश्चात कुछ पशुओं में जेर नहीं गिरती है व शरीर बाहर आता है जिसके कारण पशुपालकों को प्रजनन के अंतिम समय व प्रजनन के बाद विशेष ध्यान देना चाहिए।

प्रो. राजीव जोशी (9414141189) राजुवास

पशु के सामान्य व्यवहार को जानना अत्यन्त उपयोगी है

पशुओं के व्यवहार की उचित जानकारी होना पशुपालकों के लिए अत्यंत आवश्यक और उपयोगी होता है। बहुत सी बीमारियों के निदान में पशु का व्यवहार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बताना उचित होगा की पशु अपने व्यवहार के द्वारा अपनी विभिन्न प्रक्रियाओं एवं भावनाओं को दर्शाते हैं। व्यवहार मूक पशु की जिंदगी में बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। व्यवहार के विभिन्न पहलू पशु के कार्यों को सार्थकता प्रदान करते हैं। तकनीकी भाषा में कहें तो व्यवहार पशु और उसके वातावरण के मध्य एक कड़ी का कार्य करता है। व्यवहार को प्रदर्शित करने में उसके शरीर के विभिन्न तंत्र अहम् भूमिका निभाते हैं जिनमें प्रमुख तौर पर तंत्रिका तंत्र एवं अंतःस्त्रावी प्रणाली है। पशु के रख–रखाव की परिस्थितियां अच्छी हो एवं पशु स्वस्थ हो तो व्यवहार सामान्य रहता है। किसी भी विपरीत परिस्थिति, भय की अवस्था, रोग, चोट इत्यादि में पशु के व्यवहार में परिवर्तन हो सकता है। इन परिवर्तनों को पहचानने के लिए सामान्य व्यवहार की जानकारी अति आवश्यक होती है। सामान्य व्यवहार को विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है। चारा/बांटा/खाने का व्यवहार, संचार, सामाजिक व्यवहार, मातृत्व और प्रजनन/यौन संबंधी व्यवहार आदि।

चारा/बांटा/खाने का व्यवहार:-

चारा/बांटा/खाना खाने का व्यवहार अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह पशु के स्वास्थ्य को इंगित करता है, इसे फीडिंग बिहेवियर भी कहते हैं। खाने का व्यवहार पशु के उत्पादन से जुड़ा है चाहे वह दुग्ध व मांस का उत्पादन हो या पशु के बोझा ढ़ोने की क्षमता हो। सामान्य स्थिति में पशु का खाना उपलब्ध होने पर जब भूखा होता है तब ही खाना खाता है तथा सतुंष्टि होने पर खाना छोड़ देता है। पशु का खाने का व्यवहार बाहरी अथवा आन्तरिक वातावरण पर बहुत निर्भर करता है। बाहरी वातावरण का मतलब है–पशु के आसपास की स्थिति एवं वातावरण का तापमान। आसपास की स्थिति यदि संतोषप्रद होती है तो पशु के खाना खाने का व्यवहार सामान्य रहता है।यदि आसपास की स्थिति से पशु तनावग्रस्त है तो इसका सीधा असर उसके खाना खाने के व्यवहार पर पड़ता है। यह स्थिति तब पैदा होती है जब पशु बाड़ों में गंदगी रहती हो। मक्खी–मच्छर, चिन्चड़ ज्यादा हों, ज्यादा पशु एक जगह रहते हों, पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं हो, पशुओं के समूह में आक्रामक स्वभाव के पशु हों इत्यादि। अधिक या कम वातावरणीय तापमान पशु के खाने के व्यवहार को बहुत प्रभावित करता है। आन्तरिक वातावरण से मतलब है पशु किसी रोग से ग्रसित हो अथवा आंतरिक परजीवी हों, तो खाने के व्यवहार को बहुत प्रभावित करती है। खाने का स्वाद भी खाने के व्यवहार को प्रभावित करता है। पशुपालकों को इस बात का विशेष ख्याल रखना चाहिए की पशु का चारा/बांटा/खाना ऐसा हो जिसमें पोषक तत्वों के साथ स्वाद भी हो ताकि पशु उसे खा सके। चारे/बांटे की गंध भी पशु के लिए महत्वपूर्ण होती है। कई बार बांटे/खल/चूरी इत्यादि में सक्रंमण/फंगस इत्यादि की वजह से बदबू उत्पन्न हो जाती है। पशुपालकों को चारे/बांटे/खाने इत्यादि के रख–रखाव का उचित ख्याल रखना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पशु का मूत्र, गोबर,मेंगने इत्यादि खाने में न मिलें। रोंमथी पशुओं जैसे गाय,भैंस इत्यादि में रेशे युक्त चारे का बहुत महत्व होता है। यह पशु के बड़े पेट या रूमेन को भरने में सहायता करता है, जिससे पशु को संतुष्टि का अनुभव होता है।

संचार का व्यवहार:-

संचार का व्यवहार पशुओं के लिए एक तरह से भाषा का काम करता है। इसके द्वारा पशु एक दूसरे को सन्देश देते हैं। इन सन्देशों में ध्वनि पैदा करना, देखना, सुनना, सूंघना इत्यादि शामिल होते हैं। यह सन्देश विभिन्न स्थितियों में दिए जा सकते हैं। पशुपालक अपने पशुओं के व्यवहार को नजदीक से समझ कर इन संदेशों का पता लगा सकते हैं। इसे पशुओं के उचित रख–रखाव के लिए आवश्यक माना जाता है। जागरूक पशुपालक इस तरह से कई बार अपने पशुओं को गम्भीर दुर्घटनाओं से भी बचा सकते हैं या फिर पता लगते ही उसका उचित निराकरण कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर यह सन्देश मां के द्वारा बच्चे को दिया जा सकता है। अक्सर देखने में आता है कि एक धीमी ध्वनि गाय के द्वारा अपने बछड़े या बछड़ी को खाने या दुग्ध दूहे जाने के पहले दी जाती है। प्रजनन काल में नर पशु मादा पशु को आकर्षित करने के लिए ध्वनि सन्देश देते हैं। ध्वनि सन्देश किसी एक पशु के द्वारा एक समूह के अन्य पशुओं को सावधान करने के लिए भी दिए जाते हैं। इसके अतिरिक्त भयभीत होने की अवस्था में, दर्द होने पर, चोट लगने पर या किसी जहरीले जानवर के द्वारा काटे जाने पर भी ऐसे सन्देश ध्वनि के माध्यम से दिए जाते हैं। संचार के व्यवहार में पशुओं के शरीर में पैदा होने वाले रसायनों की भी अहम् भूमिका होती है।

सामाजिक व्यवहार:-

यह देखने में आता है कि समूह में रहने वाले पशु किसी एक समय एकल व्यवहार करते हैं। उदाहरण के तौर पर एक साथ समूह में चरना, आराम करना तथा जुगाली करना। यह सामाजिक व्यवहार का एक अभिन्न हिस्सा है। सामान्य रूप से रोमंथी पशुओं के समूह में शांत स्वभाव देखा जाता है। नर पशु आक्रामक हो सकते हैं, छोटे बछड़े–बछड़ी बड़े पशुओं को देख कर चारे में मुंह देते हैं तथा धीरे–धीरे खाना सीख जाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक व्यवहार है। पशुओं में चाट कर एक दूसरे को साफ करना भी एक सामान्य सामाजिक व्यवहार है।

मातृत्व का व्यवहार:-

पशुओं में जन्म देने के तुरंत बाद मां के द्वारा अपने बच्चे को जोर से चाटना एक महत्वपूर्ण मातृत्व व्यवहार है। इससे मां–बच्चे के बीच एक जुड़ाव होता है। यह पशु के शरीर में पाए जाने वाले होर्मोनों की वजह से होता है। बकरियों में जन्म के बाद के 5–10 मिनट मां–बच्चे के बीच जुड़ाव पैदा करने में सहायक होते हैं। कई बार ये देखने में आता है कि चाटने में ज्यादा देरी हो जाये तो पशु बच्चे को अस्वीकार भी कर सकता हैं। यह पशु का असामान्य व्यवहार कहलायेगा। मातृत्व का व्यवहार जंगल में रहने वाले पशुओं व रेवड़ में रहने वाले पशुओं में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है जिसमें मादा पशु अपने बच्चे को हर संकट से बचाती है।

प्रजनन/यौन व्यवहार:-

पशुओं में प्रजनन/यौन व्यवहार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह व्यवहार पशुओं में पाए जाने वाले हॉर्मोनो पर निर्भर करता है, इसकी वजह से ही पशुओं में मद चक्र आता है तथा पशु प्रजनन योग्य होता है। मद चक्र की विभिन्न अवस्थाओं में हॉरमोन का प्रभाव होता है तथा पशु का व्यवहार भी होरमोन के प्रभाव से बदलता है, जिससे पशुपालकों को पता लग जाता है की पशु ताव में आया है तथा प्रजनन योग्य हो गया है। प्रजनन सम्बधित हॉर्मोनो के कारण नर पशु प्रजनन योग्य मादा की पहचान कर सकते हैं। जिन समूहों में नर व मादा पशु साथ रहते हैं उनमें इस व्यवहार के कारण प्राकृतिक गर्भाधान में आसानी होती है। मादा पशु के ताव में आने की स्थिति में नर पशु भी विशेष प्रकार का यौन व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। इसमें नर पशु ऊपर वाले होंठ को उपर की तरफ मोड़कर सूंघता है। यह व्यवहार बकरों,घोड़ों इत्यादि में आसानी से देखा जा सकता है। नर पशु के द्वारा मादा पशु के मूत्र को सूंघना या उसके रहने के स्थान को सूंघना भी इस व्यवहार का हिस्सा है, इसको तकनीकी भाषा में फ्लेहंम प्रभाव कहते हैं। नर पशु के यौन व्यवहार से जिस मादा पशु के शांत ताव होता है, उसका भी पता लग जाता है।

पशुओं के व्यवहार को पहचानने का महत्व:-

पशुओं के व्यवहार की जानकारी से पशु की प्रकृति का पता चलता है। पशु के व्यवहार को जानने के लिए कई क्रियाओं को देखा जाता है जैसे कि पशु के चलने की क्रिया, खड़े रहने का तरीका, चरना, जुगाली करना, पानी पीने का तरीका, जानवरों का एक दूसरे को चाटना या खुजलाना इत्यादि। उदाहरण के तौर पर शांत प्रकृति एवं दुग्ध निकालने के समय शांत रहने वाली गाय को एक आदर्श गाय माना जाता है, उसे पहला नम्बर दिया जाता है। इसी तरह कुछ गायें ऐसी होती है जो कि दूध निकालने की तैयारी के समय तो शांत रहती है परन्तु दुग्ध निकालते वक्त अपनी पूंछ को हिलाती है तथा खुद भी हिलती हैं। यहां ये पता लगाना जरूरी होता है कि गाय किसी विशेष कारण से ऐसा कर रही है या फिर उसका व्यवहार हमेशा से ही ऐसा है। कई बार शांत गायें भी किसी स्थिति विशेष की वजह से नर्वस या बेचैन हो सकती हैं। पशुपालकों को ऐसे कारणों का तुरंत ही निराकरण करना चाहिए। इसके लिए पशु के व्यवहार की समय समय पर जानकारी रखना उचित होता है ताकि कोई भी बदलाव तुरंत पता लग जायें। कई बार जानवर कम जुगाली करता है या बार–बार उठता–बैठता है तो उस पर ध्यान देना जरूरी है। यदि पशुपालक के पास कम पशु हैं तो प्रत्येक पशु की उसके द्वारा निगरानी की जा सकती है। यदि पशु फार्म बड़ा है तो उसमें कार्य करने वाले व्यक्तियों को पशुओं के व्यवहार की जानकारी रखने को निर्देशित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये देखना उचित है कि प्रत्येक पशु के लिए पर्याप्त जगह, खाने पीने की उचित व्यवस्था हो, पशु समूहों में आक्रामक पशुओं की पहचान करें,पशुओं के उत्पादन का रिकार्ड रखें, और बाड़ों की उचित साफ सफाई रखें। ये ध्यान रखना जरूरी है कि पशु के असामान्य व्यवहार के पीछे कोई गम्भीर परिस्थिति भी हो सकती है। समय पर उसके निराकरण से पशु स्वस्थ रहता है तथा उसका उत्पादन कम नहीं होता। पशु के व्यवहार की जानकारी उसके शरीर की क्रियाओं को समझने में भी सहायक होती है। असामान्य व्यवहार होने पर पशुचिकित्सक से परामर्श ले सकते हैं।

–प्रो.नलिनी कटारिया (मो.9460073879)
–डॉ. आशीष जोशी–राजुवास

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शुरू

जिला स्तर पर पशुपालन तकनीकी सेवाओं का विस्तार

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र (वीयूटीआरसी) स्थापित करने की ऋंखला में 10 जिलों मे इन केन्द्रों को मंजूरी दी गई है। इन केन्द्रों के खुलने से जिला स्तर पर पशुधन संपदा के विकास और प्रबंधन के प्रशिक्षण एवं अनुसंधान का लाभ सुदूर गांवों में रहने वाले पशुपालकों को मिलना शुरू हो गया है। नागौर, भरतपुर, चितौडगढ़, श्रीगंगानगर जिलों में विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित भवनों में कार्य शुरू किया गया है। कोटा, चूरू, डूंगरपुर, अजमेर, टोंक और सीकर जिलों में किराये के भवनों में केन्द्रों का संचालन हो रहा है। इन केन्दों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विषय विशेषज्ञों के बतौर 9 प्राध्यापकों और पशुधन सहायकों की सेवाएं, पशुपालकों को प्रशिक्षण, पशुरोग निदान और उपचार के लिए सुलभ करवाई गई है। इससे पशुओं के प्रंबधन की आधुनिक तकनीक, विभिन्न रोगों की जानकारी व सही उपचार की विधियों को गांव–ढ़ाणी तक बैठे पशुपालकों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। केन्द्र पर स्थापित प्रयोगशालाओं में रोग निदान के लिए जांच की सुविधांए भी उपलब्ध करवाई गई है। केन्द्रों के विषय विशेषज्ञों को केन्द्र सहित गांवो में भी पशुपालकों के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करने है।

दुजार गांव में प्रशिक्षण शिविर लगा

वीयूटीआरसी केन्द्र बाकलियां (नागौर) द्वारा दुजार गांव में पहली बार पशुपालकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। 47 पशुपालकों मे 12 महिलाएं भी इसमें मौजूद रही। पशुचिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. कमल पुरोहित और डॉ. पूनम शोरन ने पशुपालकों से सीधा संवाद किया। पशुपालकों में खनिज लवण का वितरण भी किया गया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-अगस्त, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (Bovine ephemeral fever)	गाय, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurolosis)	भैंस	सीकर
मुँह खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, अनूपगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, राजसमन्द,पाली, सीकर, चितौड़गढ़
ठप्पा रोग (Black Quarter)	गाय, भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भैड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ
बोचूलिज्म (Botulism)	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्री गंगानगर, बीकानेर
सर्रा (Trypanosomiasis)	ऊँट, भैंस	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर
थाइलेरिओसिस बेबीसियोसिस (Theileriosis, Babesiosis)	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर
पर्ण–कृमि (Trematodes)	भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली (Mange)	ऊँट, भेड़	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

जापानी नस्ल की बटेर का पालनः लाभदायक व्यवसाय

बटेर पक्षी का मांस खाने में स्वादिष्ट और लजीज होता है। इसके मांस के लिए लोग पैसों की परवाह नहीं करते। मांस व अंडा उत्पादन के क्षेत्र में भी बटेर पालन कर बहुत लाभ कमाया जा सकता है। जापानी नस्लों के विकास के साथ ही बटेर पालन अब व्यवसाय के रूप में देश के कई हिस्सों में तेजी से फैल रहा है। अपार संभावनाओं से भरे पूर्वांचल में व्यवसाय के रूप में इसका विकास होना अभी बाकी है। स्वादिष्ट मांस के रूप में बटेर को बड़े चाव से पंसद किया जाता है। इस दिशा में ढ़ाई दशक के लम्बे प्रयास के बाद बटेर की पालतु प्रजाति का विकास मांस व अंडा उत्पादन के लिए किया गया है। बटेर पालन के लिए मुख्य रूप से फराओं, इग्लिश सफेद, कैरी उत्तम, कैरी उज्जवल, कैरी श्वेता, कैरी पर्ल व कैरी ब्राउन की जापानी नस्लें है। शीघ्र बढ़वार, अधिक अंडे उत्पाद, प्रस्फुटन में कम दिन सहित तत्कालिक वृद्धि के कारण यह व्यवसाय का रूप तेजी से पकड़ता जा रहा हैं।वर्ष भर के अंतराल में ही मांस के लिए बटेर से 8–10 उत्पादन ले सकते हैं। चूजे 6 से 7 सप्ताह में ही अंडे देने लगते हैं। मादा प्रतिवर्ष 250 से 300 बंडे देती है। 80 प्रतिशत से अधिक उत्पादन 9–10 सप्ताह में ही शुरू हो जाता है। इसके चूजे बाजार में बेचने के लिए चार से पांच सप्ताह में ही तैयार हो जाते हैं। एक मुर्गी रखने के स्थान में ही 10 बटेर के बच्चे रखे जा सकते हैं। इसके साथ ही रोग प्रतिरोधक होने के चलते इनकी मृत्यु दर भी कम होती हैं। सबसे महत्वपूर्ण है कि बटेर को किसी भी प्रकार के रोग निरोधक टीका लगाने की जरूरत नहीं होती है। एक किलोग्राम बटेर का मांस उत्पादन करने के लिए दो से ढ़ाई किलोग्राम राशन की आवश्यकता होती है। बटेर के अंडे का भार उसके शरीर का ठीक आठ प्रतिशत होता है, जबकि मुर्गी व टर्की के तीन से एक प्रतिशत ही होता है। कृषि विज्ञान केन्द्र पिलखी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी. के. सिंह के अनुसार विदेशों में बटेर उत्पादन एक विकसित व्यवसाय का रूप ले चुका हैं। भारत में इसका विकास धीरे–धीरे हो रहा है। तापमान के हिसाब से पूर्वांचल में इसकी अकूत संभावना है। इसको व्यवसायिक रूप देकर बटेर उत्पादन कर इस दिशा में अच्छी आय कमा सकते हैं। जापानी बटेर को आमतौर पर बटेर कहा जा सकता है। पंख के आधार पर इसे विभिन्न किस्मों में बांटा जा सकता है। जैसे फराओं, इंग्लिश सफेद, टिक्सडो, ब्रिटिश रेज और माचुरियन गोल्डन। जापानी बटेर हमारे देश में लाया जाना किसानों के लिए मुर्गी पालन के क्षेत्र में एक नये विकल्प के साथ साथ उपभोक्ताओं को स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने में काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इसे सर्वप्रथम केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतदार, बरेली में लाया गया था। यहां इस पर शोध कार्य किए जा रहे हैं। आहार के रूप में प्रयोग किए जाने वाले अतिरिक्त बटेर में अन्य विशेष गुण भी हैं, जो इसे व्यवसायिक तौर पर लाभदायक अंडे तथा मांस के उत्पादन में सहायक बनाते हैं।

1. बटेर प्रतिवर्ष तीन से चार पीढ़ियों को जन्म दे सकने की क्षमता रखता है
2. मादा बटेर 45 दिन की आयु से ही अंडे देना आरम्भ कर देती है, और साठवें दिन तक पूर्ण उत्पादन की स्थिति में आ जाती हैं
3. अनुकूल वातावरण मिलने पर बटेर लम्बी अवधि तक अंडे देते रहते हैं, और मादा बटेर में औसतन 280 तक अंडे दे सकती है
4. एक मुर्गी के लिए निर्धारित स्थान में 8 से 10 बटेर रखे जा सकते हैं। छोटे आकार के होने के कारण इनका संचालन आसानी से किया जा सकता है, साथ ही बटेर पालन में दाने की खपत भी कम होती हैं
5. शारीरिक वजन की तेजी से बढ़ोतरी के कारण ये पांच सप्ताह में ही खाने योग्य हो जाते हैं
6. बटेर के अंडे और मांस में काफी मात्रा में अमीनों अम्ल, विटामिन, वसा और धातु आदि पदार्थ उपलब्ध रहते हैं
7. मुर्गियों की अपेक्षा बटेरों में संक्रामक रोग कम होते हैं। रोगों की रोकथाम के लिए मुर्गी–पालन की तरह इनमें किसी प्रकार का टीका लगाने की आवश्यकता नहीं हैं

–डॉ. मंजीत, डॉ. मिनाली, डॉ. सी.एस.ढाका,
एवं प्रो. बसंत बैस (मो. 9413311741) राजुवास

सफलता की कहानी

जसवंत ने खुशहाली की ओर बढ़ाए कदम

जीवन में सफलता के लिए समय के साथ बदलाव जरूरी होता है,उसी प्रकार खेती व पशुपालन को नया फलक देने के लिए परिवर्तन आवश्यक हैं। नोहर जिला हनुमानगढ के रामगढ़ गांव के प्रगतिशील किसान जसवंत सहारण ने अपनी मेहनत और लगन से पुश्तैनी खेती के व्यवसाय को नया फलक देकर खुशहाली की ओर कदम बढ़ाए हैं। कृषि विषय लेकर 12वीं दर्जे तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद जसवंत ने अपने खेत–खलिहान की ओर रुख किया। कुछ नया करने और मेहनत से तकदीर संवारने का जज्बा शुरू से ही उसके जहन में था। उसके परिवार के पास 43 बीघा बरानी और नहरी जमीन थी। ज्यादातर रेतीली व पानी की कमी वाली कृषि भूमि पर परंपरागत फसलों के अलावा अन्य किसी फसल की बुआई का जोखिम नहीं लिया जा सकता था। जसवंत ने कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर खेत में सिंचाई व्यवस्था के लिए एक डिग्गी का निर्माण करवाया और बाद में एक ट्यूब वैल भी खुदवा लिया। सिंचाई सुविधा से कृषि का रकबा बढने लगा लेकिन साथ ही समझदारी से काम करते हुए जसंवत ने खेत में मुर्रा नस्ल की दुधारू गायें और डिग्गी में मछली पालन जैसे कार्यों को भी शामिल कर खेत से आय का अतिरिक्त जरिया बना लिया। जसवंत ने मछली पालन के बारे में प्रशिक्षण प्राप्त कर कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर के सहयोग से खेत की डिग्गी में मछली पालन शुरू कर दिया। कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर कृषि और पशुपालन की नवीनतम तकनीक को कृषि कार्यों में सम्मिलित कर खेती–बाड़ी के कार्यों को तेजी से आगे बढा कर लाभ प्राप्त किया है। जल बचत के लिए 20 बीघा भूमि पर ड्रिप सिंचाई करके सरसों, नरमा, मिर्च व अन्य नकदी फसलें लेते हैं। परंपरागत फसलों में देशी कपास, मूंगफली, ग्वार, गैहूं व अन्य फसलों से प्रति वर्ष करीब 8 से 10 लाख रू. की आमदनी कर लेते हैं।

(जसवंत सहारण–9829418251)

मुख्य समाचार

प्रो. गहलोत द्वारा अमेरिकन ऊँटनी का उपचार

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के ऊंट अनुसंधान और चिकित्सा सेवाओं ने विश्व स्तर पर नए आयाम स्थापित करने में सफलता अर्जित कर अपनी विशेषज्ञता की विशिष्ट पहचान बनाई है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पेनसिल्वानिया शहर में स्थित चार्मिंग फोर्ज फॉर्म के मालिक करेन ओ–नैल ने अपनी 5 वर्षीय ऊंटनी के मसूड़ों में सूजन आने के रोग से निजात नहीं मिलने पर ई–मेल से वेटरनरी विश्वविद्यालय के क्लिनिक के निदेशक प्रो. टी. के. गहलोत से रोग निदान व चिकित्सा बाबत परामर्श लिया। ओ–नैल द्वारा पीड़ित ऊंटनी की भेजी गई विस्तृत जानकारी और उसके रोग प्रभावित मुंह की तस्वीरों का अवलोकन करने के बाद प्रो. गहलोत ने रोग निदान बाबत उचित परामर्श भेज दिया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के क्लिनिक निदेशक प्रो. गहलोत ने ऊंटों के टूटे जबड़े का ईलाज विकसित कर ऊंट सम्बन्धित रोगों व अनुसंधान पर 5 पुस्तकों तथा गत 20 वर्षो से जर्नल ऑफ केमल प्रेक्टिस एण्ड रिसर्च पत्रिका का सपांदन और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ऊंट संगोष्ठियों में 15 से अधिक देशों की यात्रा कर विशेषज्ञता के रूप में अपनी पहचान बनाई हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा हाल ही में ऊंट को राज्य स्तरीय पशु का दर्जा दिए जाने से ऊंटों के सवंर्द्धन और संरक्षण कार्यो को गति मिलेगी।

बैलगाड़ी रैली को किया रवाना

बीकानेर। राष्ट्रीय गाय आंदोलन द्वारा गौ महोत्सव के तीसरे दिन वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बैल गाडियों की रैली को वेटरनरी विश्वविद्यालय परिसर से झंडी दिखाकर रवाना किया। इस बैलगाड़ी रैली में करीब 50 बैल पालकों ने भाग लिया इस अवसर पर अधिकारी/कर्मचारीगण, प्राध्यापकगण और छात्र बडी संख्या में मौजूद थे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. टी.के. गहलोत, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. जे.एस. मेहता ने रैली में भाग लेने पहुँचे बैलों की स्वस्थता की जांच की। स्वस्थ बैल पालकों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि राज्य की देशी गौवंश नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण में बैलों का विशेष महत्व है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बैलों की उपयोगिता सर्व विदित है और शहरों में भी यह मालवाहक व लोगों की रोजी–रोटी का जरिया बना हुआ है।

मिश्रित खेती–पशुपालन एक उत्तम विकल्प

राज्य की पशुधन संपदा नीति में पशुपालन क्षेत्र में उत्पादन, उत्पादकता बढ़ाने तथा इस क्षेत्र के टिकाऊ विकास के माध्यम से कमजोर तबके की आजीविका और ग्रामीण समुदाय को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने का भाव निहित है। इसमें राज्य के पशुओं की संख्या में गुणवता युक्त बढ़ोतरी भी शामिल है। राजस्थान में टिकाऊ खेती व पशुपालन वैज्ञानिकों, अनुसंधान कर्ताओं प्रसार कार्यकर्ताओ और नीति निर्धारकों के लिए एक अहम शब्द है। वे इस दिशा में कार्य तो करते हैं, लेकिन यदा कदा मिश्रित खेती के प्रमुख तत्वों से कुछ अलग हटकर करने से उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधाएं आती हैं। राजस्थान और खासतौर पर पश्चिमी राजस्थान के संदर्भ में पानी की उपलब्धता पर कृषि और पशुपालन का विकास टिका हुआ है जो कि स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल ही होना चाहिए। अर्थ शास्त्री प्रो. वी.एस.व्यास ने सस्टेनेबल लाईव स्टोक में पशुधन विकास के लिए पशुओं की संख्या में इजाफा और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधानों के मध्य पारस्परिक समन्वयक के अभाव को इंगित किया है। घटती पशुधन संपदा और कमजोर गुणवता का मुद्दा वेटरनरी विश्वविद्यालय और पशु वैज्ञानिकों द्वारा उठाया जा रहा है। इसके लिए पशुधन के लिए उपलब्ध संसाधनों, घटती चारागाह भूमि और पशु आहार उपयोगी फसल उत्पादन व बगीचों की वर्तमान स्थिति की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है। राज्य में कृषि पारिस्थितिकी में परिवर्तन को भी संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के अनुसार मान्य करना होगा। इन परिवर्तनों की जड़ में बढती हुई आबादी की आजीविका जरूरतों को पूरा करने के लिए टिकाऊ खेती और पशुधन उत्पादन ही एक तत्काल विकल्प के रूप में है। इन दोनों के आपसी समन्वयक यानि की मिश्रित खेती ही सही रणनीति हो सकती है जो लोगों की स्थाई आजीविका का एक सुदृढ़ आधार है। बढती जनसंख्या का दबाव, खेती में नई तकनीक और विकास के बावजूद "मिश्रित खेती" की अवधारणा कहीं पीछे चल रही है। इसके साथ–साथ खेतिहार समुदाय छोटे– मंझोले हिस्सों में खेतिहर भूमि बट रही है। इसके पशुधन विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। इस क्षेत्र में आजीविका सृजन के अवसर उपलब्ध हैं लेकिन कृषि और पशुपालन वृद्धि में और अधिक समन्वयक की जरूरत है। किसान की खेती के साथ – साथ पशुओं का पालन भी उसकी पहली पसंद और प्राथमिकता में है लेकिन वे ऐसा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर ही करते हैं। उन्हे विशेषज्ञ सलाह और होने वाले फायदों के बारे में बताया जाना चाहिए। शहरीकरण और बढती आबादी के साथ पशुपालन संसाधनों की कमी से पालतु पशुओं की संख्या में कमी आ रही है। हमें उत्पादन और प्राकृतिक संसाधनों के मध्य आवश्यक समन्वयक को ध्यान में रखते हुए एक स्थाई और टिकाऊ उद्देश्य की ओर पूरा ध्यान देना होगा। समय आ गया है कि पशुधन संपदा और फसल तकनीकों का पूर्व मूल्यांकन करके ही क्षेत्र के किसानों और पशुपालकों को एक टिकाऊ व्यवस्था के लिए प्रेरित करें।

– प्रो. अनिलकुमार श्रीवास्तव, राजुवास

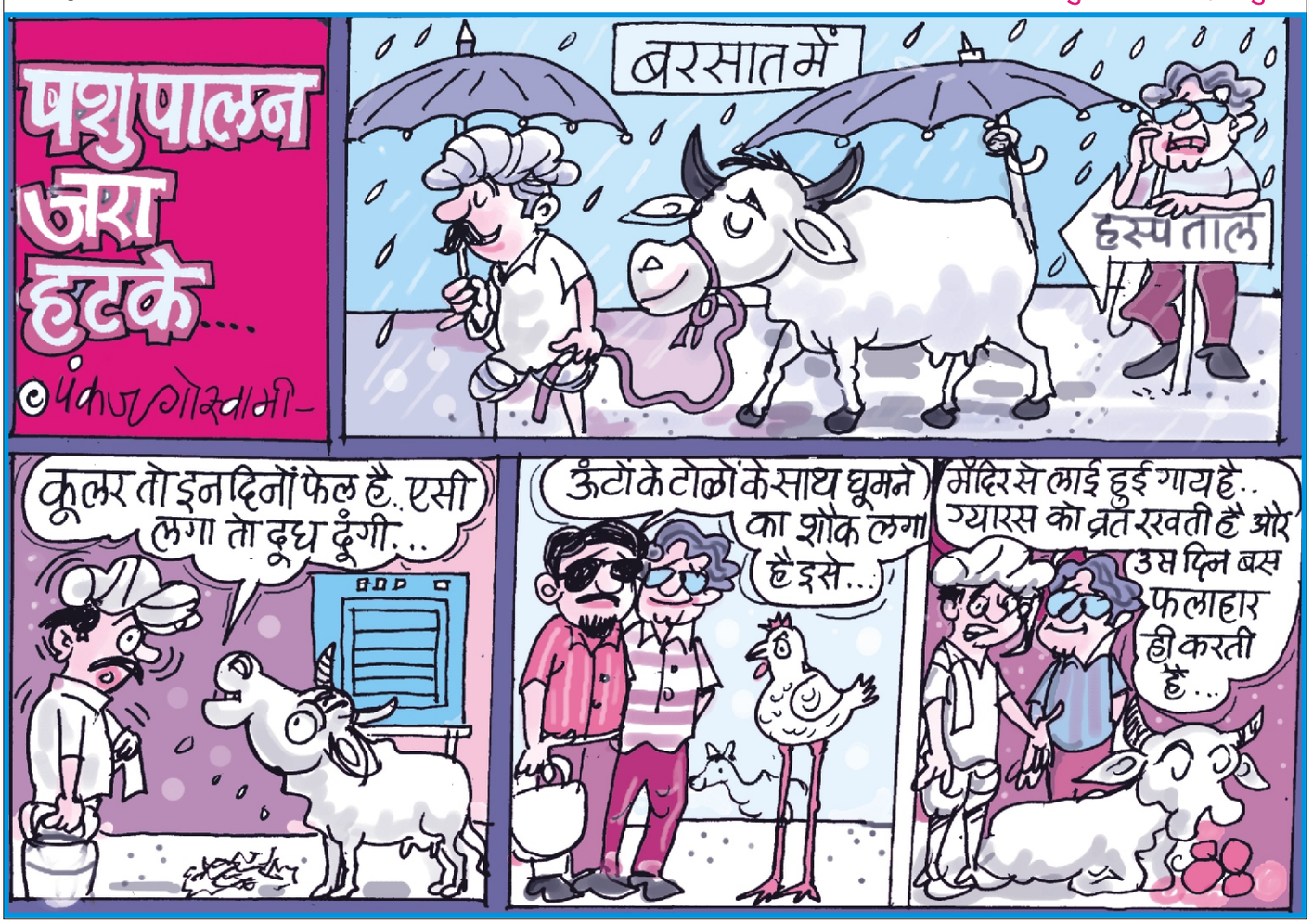

चांदन में थारपारकर गौवंश का संरक्षण व संवर्द्धन कार्य

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के तहत स्वर्ण नगरी जैसलमेर जिले के खूबसूरत गांव चांदन में थारपारकर गौवंश का संरक्षण व संवर्द्धन का कार्य पिछले तीस वर्षो से पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन पर किया जा रहा है जो देश में देशी नस्ल की गायों के संरक्षण व संवर्द्धन के कार्य की आवश्यकता महसूस हो रही थी तब इस नस्ल के संरक्षण व संवर्द्धन का कार्य देश में सर्वप्रथम चांदन गांव के इस केन्द्र पर शुरू किया गया। वर्तमान में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत परियोजना के उद्देश्य देश में थारपारकर नस्ल को बढ़ावा देने के साथ छोटे–छोटे थारपारकर गौवंश प्रजनन फार्मो की स्थापना करना है ताकि देश की प्रमुख गौवंश नस्लों में से एक थारपारकर नस्ल का संरक्षण व संवर्द्धन हो सके। वर्तमान में इस केन्द्र द्वारा 190 गाय व 225 बछड़ियां तथा 120 नर पशु यहां पोषित हो रहे हैं। यह नस्ल मूलतः पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख दूधारू नस्ल है। यह गर्मी में 45डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान व सर्दी में 0 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान में भी बिना प्रभावित हुए दूध दे सकती है। यह नस्ल खूंटे पर बंधने के बजाय खुले बाड़ो में रहना अधिक पसंद करती है और थाणों में चारा खाने के बजाय चरागाहों में चरना अधिक पसंद करती है। यह कम चारा व दाना यानि कम खर्च से अधिक दूध देकर पशुपालक को लाभान्वित करती है। इस नस्ल के दूध की गुणवता भी काफी अच्छी होती है। इसके दूध में औसतन 4.50 प्रतिशत वसा व लगभग 8.50 प्रतिशत एस एन एफ होता है। इस नस्ल की गाय ने इस केन्द्र पर एक दिन में 25 किलोग्राम तथा एक ब्यात में लगभग 5000 किलोग्राम दूध दिया है तथा 305 दिन का दूध 4648.7 किलोग्राम देकर एक रिकॉर्ड कायम किया है जबकि सामान्यतः इस नस्ल का औसत दूध निजी फार्मो पर प्रतिदिन 5–6 किलोग्राम तथा एक ब्यात का अधिकतम दूध 1700–1800 किलोग्राम तक ही है जो कि इस फार्म के रिकॉर्ड से बहुत कम है। इसके सुधार हेतु इस फार्म से अच्छी गुणवता व दूध उत्पादन वाले नर पशुओं का वैज्ञानिक तरीके से पालन पोषण करके नर पशुओं को गौशालाओं, पंचायतों व गैर सरकारी संस्थाओं को वितरित किया जाता है। पिछले पांच वर्षो में 267 पशुओं को देश के विभिन्न प्रान्तों में दिये गए हैं। इस नस्ल के पशुओं को देश के जम्मू कश्मीर व पूर्वी भारत के कुछ प्रांत को छोड़कर हिमाचल प्रदेश से केरल तक लगभग हर प्रांत में दिये गये हैं।

यह नस्ल शुष्क व अर्धशष्क इलाके में इसका पालन सरल तरीके से होता है अपने जीवन काल के लगभग बीस वर्ष की अवधि में लगभग 15–16 बार बच्चे दे सकती है। इस केन्द्र की 569 नम्बर की गाय ने अभी तक अपने जीवन में तीन बार जुड़वां बच्चे जिसमें दो बार दोनों बछड़ियां तथा एक बार एक बछड़ा व एक बछड़ी पूर्णतया स्वस्थ व जीवित पैदा की है। इस गाय के अलावा दो गाय और भी हैं जो एक–एक बार एक साथ दो–दो बच्चे दे चुकी हैं। इस केन्द्र पर अधिकतम दूध एक गाय का 25 से बढ़ाकर 30 लीटर तक करने का प्रयास किया जा रहा है साथ ही सूखा काल

प्रति गाय प्रति पशु 110 दिन से कम करके 90 दिन तक लाने की योजना पर कार्य चल रहा है। अधिकतम उन्नत बछड़ा–बछड़ी पैदा करके गौशालाओं, पंचायतों, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के साथ–साथ प्रगतिशील किसानों व पशुपालकों को वितरित करने की योजना पर भी कार्य चल रहा है।

डॉ.राहुल सिंह पाल, राजुवास

भेड़ तथा बकरियों के प्रमुख विषाणुजनित रोग और बचने के उपाय

विषाणुजनित रोग पशुओं के उत्पादन (दूध, मांस आदि) तथा प्रजनन क्षमता पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। इन रोगों का कोई प्रभावी इलाज संभव नहीं है इसलिये इनकी रोकथाम के लिये समय – समय पर टीकाकरण तथा उचित प्रबंधन ही एकमात्र उपाय है। पशुपालकों की जानकारी के लिये कुछ महत्वपूर्ण विषाणुजनित रोगों का विवरण इस प्रकार है:

(1)चेचक (पॉक्स)/मातारोग –

1. यह एक अत्यन्त संक्रामक रोग है जिसमें रोगी पशु सुस्त हो जाता है एवं बहुत तेज बुखार आता है।
2. चेचक के घाव पूरे शरीर पर जगह – जगह होते हैं परन्तु ये मुख्यतया आँख, होठ, नाक, गाल, जांघ आगे वाले पैरों के अन्दर की तरफ, वृषण, पूँछ एवं योनिद्वार आदि पर होते हैं।
3. शुरूआत में ये घाव छाले/फफोले के समान होते हैं जो की धीरे–धीरे मवादयुक्त घाव में बदल जाते हैं तथा अंत में इन घावों के सूखने के पश्चात इनमें पपडी/खुरंट बन जाती है।
4. इस रोग से ठीक हुए पशुओं में इस घाव को भरने में 5 से 6 सप्ताह तक लग जाते हैं।
5. गर्भित पशुओं में गर्भपात भी हो सकता हैं तथा मृत शिशु के शरीर पर चेचक के घाव दिखाई देते हैं।
6. इस रोग में घावों को रोगाणुरोधक (Antiseptic) औषधि से साफ करना चाहिए तथा अन्य जीवाणुजनित संक्रमण से बचाव के लिये एंटीबायोटिक टीकों का प्रयोग करना चाहिये।
7. इस रोग में अपेक्षाकृत मृत्युदर कम है लेकिन उत्पादन पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ता है।
8. भेड़ – बकरियों में मार्च के महीने में इस रोग से बचाव के लिये टीकाकरण किया जाता है।

(2)पेस्टी डेस पेटाइटिस रूमीनेन्ट्स (पी.पी.आर.) –

1. इस रोग में पशु को तेज बुखार के बाद पतले दस्त होते हैं तथा मुंह, आँख या योनीद्वार पर छाले हो जाते हैं, मुंह से तेज दुर्गन्ध आती है।
2. पशु खाना – पीना छोड़ देता है और अधिकांशतः बीमार पशु मर जाते हैं।
3. भेड़ – बकरियों में इस रोग से बचाव के लिये सर्दियों में टीकाकरण करना आवश्यक है।

(3)खुरपका एंव मुंहपका रोग –

1. इस रोग में पशु को तेज बुखार, शरीर में मुख्यतया मुंह, जीभ, खुरों के बीच में, थनों तथा नथूनों पर छाले हो जाते हैं जो कि बाद में अपर्याप्त इलाज तथा जीवाणुजनित संक्रमण की वजह से मवाद्युक्त घाव में तब्दील हो जाते हैं।
2. रोगी पशु के मुंह से लार का टपकना, चलने में तकलीफ होना तथा थनों में छालों की वजह से थनैला रोग होने की भी संभावना रहती है।
3. इस रोग में घावों को रोगाणुरोधक औषधि से साफ करना चाहिये तथा जीवाणुजनित संक्रमण को रोकने के लिए एंटीबायोटिक टीके लगाने चाहिये।
4. भेड़–बकरियों में इस रोग से बचाव के लिये साल में दो बार (सामान्यतया सर्दियों में तथा पतझड़ में) टीकाकरण किया जाता है।

(4)कन्टेजीयस इकथाईमा (ORF) -

1. इस रोग की शुरूआत में रोगी पशु को सुस्ती, आलसीपन, भूख की कमी तथा बुखार हो जाता है।
2. रोग के प्रारम्भ में आंसुओं का बहना तथा नाक से श्लेष्मिक श्राव का निकलना प्रमुख है।
3. पशु के नाक, मुंह, नथूनों तथा होंठो पर फुन्सियाँ हो जाती हैं जो कि 3 से 4 दिनों में मवादयुक्त घाव तथा छालों में बदल जाती है।
4. यह स्वनियंत्रित होने वाला रोग है। इसमें एक सप्ताह में घावों में खुरंट बन जाती है। यदि संक्रमण ना हो तो प्रभावित पशु में मृत्यु दर बहुत कम होती है।
5. इस रोग से बचाव के लिये टीका उपलब्ध नहीं है।

शेष पेज 16 पर....

....पेज 15 का शेष

(5)ब्लूटंग -

1. यह मुख्यतया भेड़ों की बीमारी है जो कि सामान्यतया एक साल की उम्र तक ज्यादा फैलती है।
2. इस रोग में पशु को शुरूआत में तेज बुखार, नाक का बहना, लार का टपकना तथा आंखों से आंसू आना प्रमुख है।
3. पशु के मुंह, जीभ, जबड़े, होंटों तथा खुरों में सूजन आ जाती है।
4. गर्भित पशु में गर्भपात की पूरी संभावना रहती है।
5. इस रोग से बचाव के लिये टीका उपलब्ध नहीं हैं।

भेड़ तथा बकरियों के स्वास्थ्य से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी :–

1. पशुओं से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए पशु का स्वस्थ होना आवश्यक है इसलिए समय – समय पर पशु की स्वास्थ्य सम्बन्धी जांच तथा अच्छा प्रबंधन जरूरी है।
2. प्रबंधन सम्बन्धी प्रक्रियाओं जैसे की साफ पानी, अच्छा पोषण, साफ–सुथरा घर अथवा बाड़ा, पर्याप्त खुलाव/प्रकाश तथा साफ चारागाह आदि को सुचारू रूप से संचालित कर हम रोग नियंत्रण में मदद कर सकते हैं।
3. किसी भी रोग के फैलाव को रोकने के लिये सबसे पहले रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना अतिआवश्यक है।
4. नये पशुओं को खरीदने के पश्चात उन्हें तुरंत बाड़े में नहीं लाना चहिये तथा उन्हें कुछ दिनों तक पुराने पशुओं से अलग रखना चाहिये। नये पशुओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी जांचें पूर्ण होने के पश्चात ही उन्हें बाड़े में प्रवेश कराना चाहिये।
5. मृत पशु का सही तरीके से निस्तारण (जैसे कि दबाना या गाड़ना) करना चाहिये।
6. जैविक वाहक कीड़े, पक्षी, कुतरने वाले जानवर (चूहा, गिलहरी आदि) को नियंत्रित करके कुछ संक्रामक बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है।
7. सभी पशुओं को आंतरिक परजीवियों से निपटने के लिये दवा पिलानी चाहिये। चारा रखने वाली कठहरा/लास को भी पशु के मल तथा मूत्र आदि संक्रमण से बचाना चाहिये।
8. समय पर अलग–अलग पशुओं में अलग प्रकार की बीमारियों का टीकाकरण करवाना रोग नियंत्रण में एक प्रभावी कदम है।

–डॉ. नजीर मोहम्मद, डॉ. अभिमन्यु, डॉ. प्रेरणा नाथावत एवं प्रो. ए. के. कटारिया (मो.9460073909) राजुवास

पशुओं में फुट-रोट रोग की पहचान एवं प्रबंधन कैसे करें

यह अत्यन्त संक्रामक तथा छूत वाला रोग है, जो कि मुख्यतया पशुओं के खुरों के बीच वाली जगह को प्रभावित करता है। यह रोग वर्षा ऋतु में सामान्यतः देखने को मिलता है। यह एक जीवाणुजनित रोग हैं। गाय–भैंसों तथा भेड़–बकरियों में लंगड़ेपन का यह एक प्रमुख कारण है जिससे काफी आर्थिक नुकसान होता है। एक बार बाड़े में फैलने के बाद इस रोग को नियंत्रित करना काफी मुश्किल होता है। इस रोग का जीवाणु पैरों की आंतरिक संरचना जैसे की जोड़ आदि पर आक्रमण कर सकता है। इससे पशु को मवाद युक्त गठिया रोग भी हो सकता है। सामान्यतया पशु के खुरों में चोट लगने से इसके जीवाणु आसानी से प्रवेश कर जाते हैं। वातावरण में गर्मी तथा नमी के समय यह रोग ज्यादा फैलता है।

इस रोग के मुख्य लक्षणों में लंगड़ापन, तेज बुखार, भूख की कमी तथा वजन कम होना है। दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन अचानक कम हो जाता है। खुरों के बीच की त्वचा में छाले तथा घाव दिखाई देते हैं, तथा काफी दुर्गन्ध आती है। प्रभावित पशु पैर को ऊपर उठाकर रखता है। संक्रमण के 24 घण्टे पश्चात प्रभावित अंग में सूजन व लालपन हो जाता है। पशुपालकों को ध्यान देना चाहिए कि यह रोग खुरपका–मुंहपका रोग से अलग है। खुरपका–मुंहपका रोग एक विषाणुजनित रोग है जिसमें पैरों के अतिरिक्त मुंह एवं थनों पर भी छाले होते हैं।

प्रबंधनः-

1. खुरों के बीच की त्वचा को साफ करके एंटीसेप्टिक तथा एंटीबायोटिक मलहम लगानी चाहिए।
2. एंटीबायोटिक के टीके घाव को सुखाने में काफी मददगार साबित होते हैं।
3. इस रोग के बचाव के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
4. बीमार पशु को बाड़े में सूखी जगह पर बांधना चाहिए।
5. रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
6. समय–समय पर खुरों की कतरन/छंटाई करनी चाहिए।
7. गन्दे पानी के समुचित बहाव व प्रबंधन से इस रोग को आसानी से रोका जा सकता है।

प्रो. ए.के.कटारिया (मो. 9460073909)
एपेक्स सेन्टर, राजुवास

दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचने के प्रबन्धकीय उपाय

थनैला रोग दुधारू पशुओं में अयन एवं थन से सम्बन्धित एक प्रमुख रोग है। इसे ''स्तन शोध'' के नाम से भी जाना जाता है। यह दूध देने वाले पशुओं का संक्रामक रोग है जिससे पशु की मृत्यु तो नहीं होती है परन्तु उपचार नहीं होने पर स्थायी रूप से थन से दूध निकलना बन्द हो जाता है। आर्थिक दृष्टि से यह दुधारू पशुओं में बहुत ही भयानक रोग है।

थनैला रोग के कारण:-

यह रोग मुख्य रूप से जीवाणुओं (बैक्टीरिया) द्वारा होता है। इस रोग के लिए उत्तरदायी मुख्य जीवाणु स्ट्रेप्टोकोकाई, स्टेफिलोकोकाई, कोराइनेबेक्टिरिया, स्यूडोमोनास, ई–कोलाई आदि हैं।

रोग फैलने में सहायक कारक :

अयन एवं थन पर लगी चोट के द्वारा जीवाणुओं का प्रवेश, गन्दे एवं कीचड़ युक्त फर्श द्वारा, दूध निकालने की मशीन की ढंग से सफाई नहीं करने पर मशीन द्वारा, ग्वाले के गन्दे हाथों से और उपचार की जगह गिरे हुए संक्रमित दूध की ढंग से सफाई नहीं करने पर फैलता है।

रोग के लक्षण :

- इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में अयन एवं थन में सूजन आ जाती है तथा पशु का शारीरिक तापमान भी बढ़ सकता है।
- अयन का रंग लाल हो जाता है एवं अयन को छूने पर दर्द होता है।
- दूध का रंग बदल जाता है। दूध पतला एवं छिछड़े युक्त निकलता है।
- अन्त में अयन एवं थन सख्त हो जाते हैं एवं दूध का रंग लाल भी हो सकता है। समय पर उपचार नहीं करवाने पर थन से स्थायी रूप से दूध निकलना बन्द हो जाता है।

रोग की पहचान –

शयनिक लक्षणों द्वारा और प्रयोगशाला में दूध की जांच द्वारा।

उपचार –

रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरन्त ही पशु चिकित्सक की सलाह से थनैला रोग का समुचित उपचार करवाना आवश्यक है। थनैला रोग के उपचार हेतु सामान्यतया एन्टीबायोटिक तथा सूजन एवं दर्द निवारक दवाओं सहित अन्य दवाओं का उपयोग किया जाता है।

बचाव के प्रबन्धकीय उपाय :

- दूध निकालने से पहले अयन एवं थन को स्वच्छ पानी से धोकर, पोंछ लेना चाहिए।
- दूध सही विधि (पूर्ण हस्त विधि) से निकालना चाहिए।
- दूध निकालते समय थन पर चोट नहीं लगनी चाहिए।
- दूध हमेशा लाल दवा के घोल से हाथ धोकर निकालना चाहिए।
- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- अयन एवं थन पर लगी चोट का शीघ्र उपचार करवाना चाहिए।
- दूध देने वाले पशुओं के दूध की कम से कम महीने में एक बार थनैला रोग की जांच करनी चाहिए।
- थन से पूरा दूध निकालना चाहिए। दूध छोड़ने पर इस रोग के होने की सम्भावना बढ़ जाती है।
- थनैला रोग से ग्रसित पशुओं का दूध सबसे अन्त में निकाला जाना चाहिए।
- थनैला रोग ग्रसित पशु में भी रोग ग्रसित थन का दूध अन्त में निकाला जाना चाहिए।
- रोग ग्रसित थन को दिन में 3 – 4 बार खाली किया जाना चाहिए।

पशुपालक पशुओं को थनैला रोग से बचाकर उसके अयन एवं थन को खराब होने से रोक सकता है।

–गिरीश कुमार दाखेड़ा, डॉ. एस. के. शर्मा, डॉ. मीठालाल गुर्जर
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नवानिया, उदयपुर

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

अश्वों में परजीवी संक्रमण का अध्ययन

बीकानेर और उसके आसपास के क्षेत्र में स्थित एक सौ पच्चीस घोड़ों (अश्वों) में मल की जांच परजीवी संक्रमण का पता लगाने हेतु की गई। परजीवियों के अंड़ों/लार्वा के आधार पर अश्वों के द्वारा प्रदर्शित लक्षणों में कमजोरी, निराशा, भोजन के प्रति अनिच्छा, अतिसार, कठोर बाल आवरण, शारीरिक वजन में कमी, रक्त की कमी, भूख में कमी, दुर्बल अवस्था तथा कार्य क्षमता में कमी देखी गयी। अध्ययन हेतु चुने हुए बीस अश्व मल के प्रति ग्राम में 805+48.38 अण्डे पाये गये। अश्वों में परजीवों के खिलाफ आइवरमेक्टिन की चिकित्सीय प्रभावकारिता 15 दिनों के इलाज के बाद 97.57 प्रतिशत दर्ज की गई।

स्वस्थ्य अश्वों की तुलना में परजीवियों से ग्रसित 20 अश्वों के रक्त अध्ययन में हीमोग्लोबिन, पी. सी. वी., कुल लाल रक्त कणिकाओं, लिम्फोसाइट, सीरम एल्बुमिन. एल्बुमिन ग्लोब्युटिन अनुपात में प्रभावी कमी पाई गयी तथा इओसिनाफिल, कुल सीरम प्रोटीन, सीरम ग्लोब्युलिन में प्रभावी वृद्धि पाई गयी। परजीवियों से ग्रसित अश्वों में मेलौनडाईएलडिहाईड के स्तर में वृद्धि जबकि रिड्यूसड ग्लुटाथियोन एवं केटैलेज के स्तर में कमी पाई गयी। 15 दिनों के इलाज के बाद मेलौनडाईएलडिहाईड के स्तर को सामान्य जबकि रिड्यूसड ग्लुटाथियोन तथा केटैलेज के घटे हुये स्तर को बढा हुआ पाया गया।

प्रस्तुतकर्ताः– नरेश कुमार मुदगल, मुख्य उपादेष्टाः– डॉ. ए. पी. सिंह (मो. 9414139188)

गाय व भैंसों में नेत्र सम्बन्धी विकार

इस अध्ययन में आँखों के विभिन्न शल्य चिकित्सकीय विकारों को प्रतिपादित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में कुल 95 गायों एवं भैसों में नेत्र सम्बन्धी विकारों का अध्ययन किया गया उसमें से गायों में 66.32 प्रतिशत एवं भैंसों में 33.68 प्रतिशत नेत्र विकार पाए गए। सर्वाधिक विकार स्वच्छायुज –कोप 17.89 प्रतिशत, स्वच्छा – अपरदर्शित 14.74 प्रतिशत एवं डर्मोइड 11.58 प्रतिशत पाये गये। उसके बाद पलक क्षत, रतौंधी एवं जिरोथ्थेलमिया के विकार क्रमशः छः, सात व आठवें स्थान पर पाये गये। यद्यपि मौसा एवं डिप्रोसोपस नवें एवं दसवें स्थान पर पाये गये। ये विकार जन्मजात विसंगतियों के थे एवं प्रकृति द्वारा हासिल कर लिये गये। वर्तमान अध्ययन के केस को पशुपालक द्वारा प्राप्त वितरण एंव नैदानिक परीक्षण के आधार पर वर्तमान अध्ययन के केस का निदान किया गया। वर्तमान अध्ययन में सर्वमान्य कारक बाहरी चोट या उसके पश्चात इरिटेन्ट पौधों का दूध और रस, फोरेन बॉडी संक्रमण तथा विटामिन ए की कमी पाई गयी। विभिन्न प्रकार के विकार जैसे पलकों का घाव पलकक्षत, पलकों का संक्रमण , स्वच्छ – अपारदर्शित, नेत्र गोलकों का बाहर निकलना, नेत्र गोलक का वितरण, मौसा तथा रतौंधी पाये गये। शल्यशयनिक अथवा शयनिक उपचार या तो आरिकुलो–पालपेब्रल तांत्रिका अवरोध सुप्रा ओरबिटल तंत्रिका अवरोध रिट्रोबलबार तंत्रिका अवरोध तथा स्थानीय इनफिलट्रेशन के संयोजन के साथ किया गया। जाँयलाजीन निश्चेतना को कुछ शल्य चिकित्सीय उपचार जैसे – पलकक्षत को ठीक करने में और नेत्र गोलक को बाहर निकालने में किया गया। शयनिक उपचार में नेत्र पलक के नीचे एंटीबायोटिक और डेक्सामीथासोन को इन्जेक्शन, बोरोकेलोमेल के साथ सतही उपचार आई ड्रोप तथा आंखें के मल्हम जिसमें एन्टीबायोटिक कोर्टीसोन और एट्रोपीन सल्फेट सम्मिलित थे, द्वारा किया गया। पेरेन्टल एन्टीबॉयोटिक, एन्टीइन्फलामेन्टेरी दवाओं का संक्रमण सया शल्य चिकित्सा के बाद उपयोग किया गया। क्लोरमफेनीका तथा जेन्टामाइसीन को कार्टीसोन के साथ प्रयोग किया गया जबकि स्ट्रेपटोमाइसीन, जेन्टामाइसीन व नीमोमाइसीन को डेक्सामीथासोन के साथ पलकों के नीचे इन्जेक्शन देने में उपयोग किया गया तथा ओक्सीटेट्रासाईक्लीन व स्ट्रैप्टोमाइसिन को पेरेन्टल उपयोग किया गया। विटामिन ए सप्लीमेन्ट को रतौंधी के विकार के दौरान किया गया। गायों एवं भैसों के विभिन्न बाहरी चोट तथा संक्रमित आँखों के विकारो में दिये गये उपचार के लिये उचित प्रतिक्रिया दर्शायी।

शोधकर्ताः– भूराराम, मुख्य समादेष्टाः– डॉ. टी. के. गहलोत (मो.9414137029)

निदेशक की कलम से...

पशुपालन में महिलाओं की महती भागीदारी

प्यारे पशुपालक भाइयों एवं बहिनो! बहुत बहुत बधाईयां! "पशुपालन नए आयाम" मासिक पत्र के प्रकाशन को आपके साथ एक वर्ष पूरा होने जा रहा है। इस बीच आपके पशुपालन कार्य में भी काफी उतार–चढ़ाव रहे होगें। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके पशुपालन व्यवसाय में इस मासिक पत्र से निश्चित ही कुछ नया हासिल हुआ होगा और आपकी समस्याओं को हल करने में मदद मिली होगी। इसी विश्वास के साथ "पशुपालन नए आयाम" का यह बारहंवा अंक एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी मान्यता है कि यह अंक निश्चित ही पशुपालन क्षेत्र में आपके क्रिया कलापों में एक मील का पत्थर साबित होगा। मैं आपका ध्यान एक ओर बात की तरफ लाना चाहता हूं कि सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ पशुपालन क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश की कुल जनसंख्या की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है, लेकिन उनका सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर बहुत कमजोर है खासकर ग्रामीण महिलाओं का। महिलाओं का कार्यो के प्रति लगाव, धैर्य और कार्य कुशलता उनके नैसर्गिक गुण हैं। कृषि के साथ–साथ पशुपालन, गौवंशीय गाय एंव भैंस पालन, भेड़, बकरी, खरगोस, मछली, मुर्गी, बतख पालन, रेशम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन इत्यादि क्षेत्रों में महिलाएं सहयोगी रूप में कार्य करती हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इन क्षेत्रों में उनका तकनीकी ज्ञान एवं कौशल बढ़ाया जाये, ताकि प्रति इकाई पशु उत्पादन में इजाफा हो तथा परिवार की मासिक आय में वृद्धि हो सके। महिलाओं के आर्थिक पक्ष को मजबूत करने के लिए उनके तकनीकी सशक्तिकरण को सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है। इसके लिए महिलाओं का प्रशिक्षण विशेषकर पशुपालन उद्योग पर आधारित अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक आयामों, विपणन–बाजार सम्बन्धित पूरी जानकारी देनी होगी। आदिवासी एवं कृषि कार्यों से जुड़े भूमिहीन मजदूर आदि की आर्थिक दशा सुधारने हेतु भेड़ एवं बकरी पालन में भी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाएं बकरियों को चराने ले जाती है एवं उनकी देखभाल, दुहारी एवं प्रबंधन तथा स्वास्थ रक्षा से जुड़े विभिन्न कार्य बड़ी ही कुशलता से करती हैं। पशुपालन के व्यवसाय में पौष्टिक चारे का अपना एक अलग महत्व है। हरा चारा काटने से लेकर उगाने तक में महिलाओं की अहम् भूमिका रही है। इसके साथ गोबर गैस संयंत्रों से धुंआ रहित गोबर गैस चूल्हे महिलाओं की सहभागिता से उपयोगी तथा काफी प्रचलित किये जा सकते हैं। इस हेतु महिलाओं को प्रशिक्षित कर पूरा लाभ लिया जा सकता है। अंत में, मेरी ओर से सभी पशुपालकों को एक बार पुनः विकसित पशुपालन के लिए बधाई एवं भविष्य के लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

आपका सर्वदा हितैषी–

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत अगस्त 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.स	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. जी. एन. पुरोहित** पशुरोग एवं प्रसूति विभाग	पशुओं में बांझपन एवं उसका निवारण	04.08.2014 सायं: 5.30 बजे
2	**प्रो. त्रिभुवन शर्मा** निदेशक पीएमई	भेड़ो में आहार नियोजन से उन्नत उत्पादन	12.08.2014 सायं: 5.30 बजे
3	**डॉ. शरतचन्द्र मेहता** प्रधान वैज्ञानिक, एनआरसीसी	ऊंटनी के दूध से ऊंट विकास की परिकल्पना	14.08.2014 सायं: 5.30 बजे
4	**डॉ. रजनी जोशी** पब्लिक हेल्थ एण्ड हाइजिन विभाग	पशुओं में फफुन्द से फैलने वाले रोग एवं उनकी जनस्वास्थ्य उपयोगिता	21.08.2014 सायं: 5.30 बजे
5	**डॉ. आर. के. नागदा** अधिष्ठाता, सीवीएएस, वल्लभनगर	बकरियों की विभिन्न नस्लें व उनसे प्राप्त उत्पादों का महत्व	28.08.2014 सायं: 5.30 बजे

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

कुलपति का संदेश

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कम वर्षा : पशुपालकों के हितार्थ हिदायतें

कम वर्षा एवं अकाल की स्थिति में राज्य का पशुधन किसानों के लिए टिकाऊ और भरोसेमन्द आय का स्त्रोत साबित हुआ है। पशुधन की निर्भरता भी वर्षा पर है। अतः मानसून के कमजोर रहने से पशुपालकों की कठिनाईयां बढ़ना स्वाभाविक है। राष्ट्रीय सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा ई–मेल द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय को कम वर्षा की आंशका के मद्देनजर इस क्षेत्र में आवश्यक कार्यवाही किए जाने का आग्रह किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपने विशेषज्ञों और पशुपालन तथा कृषि विभाग के संभाग स्तरीय अधिकारियों से विचार विमर्श के बाद पशुपालकों के लिए कम वर्षा की स्थिति से निपटने के लिए सलाहकारी हिदायतें जारी की गई हैं। पशुपालकों को चारे की उपलब्धता अगले मानसून तक सुनिश्चित करने के उपाय करने चाहिए, आवश्यक हो तो सग्रंहण भी करें।

सिंचित क्षेत्रों से हरे चारे के बीज वितरण पर अधिक ध्यान देकर हरा चारा उत्पादन को प्राथमिकता में शामिल करें। कमजोर मानसून की स्थिति में पशुओं में फास्फोरस और विटामिन–ए की कमी होने से प्रजनन और उत्पादन पर प्रतिकूल असर होता है। अतः इस कमी को लवण मिश्रण और विटामिन –ए के टीके लगाकर दूर किया जा सकता है। पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए गलघोंटू एव ठप्पा रोग के टीके लगवायें और चींचड़ों के प्रकोप से बचने के लिए कृमि नाशक दवा देने की जरूरत है। भेड़–बकरियों के निष्क्रमण मार्ग पर क्वारेन्टाइन, टीकाकरण और पशुओं के स्वास्थ्य जांच के पुख्ता उपाय होने चाहिए।

पशुओं के लिए पेयजल की उपलब्धता का पूर्व में ही आंकलन कर जल स्त्रोतों का समुचित रखरखाव कर लेना चाहिए। ग्राम पंचायतों, गौशालाओं एवं स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा भी इस ओर प्रभावी कदम उठाये जा सकते हैं। कमजोर मानसून का प्रभाव पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी पड़ता है जिसके कारण रोगों का तेजी से प्रसार की संभावना रहती है। किसी रोग के आकस्मिक प्रसार या महामारी की स्थिति से निपटने के लिए पशुपालन विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों से सम्पर्क किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) स्थित कैम्पस से विशेषज्ञों की सेवाएं पशु चिकित्सकों की सहायता के लिए भेजे जाने की व्यवस्था उपलब्ध रही है। राज्य के किसानों और पशुपालकों ने विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और कड़ी मेहनत के बूते अपने पशुधन उत्पादन को वांछित स्तर तक बनाए रखने में सक्षम साबित किया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय आपकी खिदमत के लिए पूरी तरह से तैयार है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

कम वर्षा की स्थिति में पशुधन कल्याण के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय आपके साथ है।

संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
उपनिदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : जुलाई, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी. के. मुरडिया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : सी. के. मुरडिया